



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 41]

नई दिल्ली, मंगलवार, फरवरी 1, 1994/माघ 12, 1915

No. 41]

NEW DELHI, TUESDAY, FEBRUARY 1, 1994/MAGHA 12, 1915

विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय

(कंपनी कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 1 फरवरी, 1994

सा.का.नि. 48(अ)--केन्द्रिय सरकार, कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 641 की उपधारा (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त अधिनियम की अनुसूची 13 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात्:--

उक्त अनुसूची में, भाग 1, 2 और 3 और उनसे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित भाग और प्रविष्टियाँ रखा जाएगा, अर्थात्:--

"भाग 1

नियुक्तियाँ

कोई व्यक्ति किसी कंपनी के प्रबंधक निदेशक का पूर्ण कालिक निदेशक या प्रबंधक के रूप में नियुक्ति के लिए तब तक पात्र नहीं होगा जब तक कि वह निम्नलिखित शर्तों का पूरा नहीं करता है, अर्थात्:--

(क) वह निम्नलिखित अधिनियमों में से किसी-को अधीन किसी अपराध को दोषसिद्धि के लिए किसी अपराध के कारावास से या एक हजार रुपये से अधिक के जुर्माने से दण्डादिष्ट नहीं किया गया है, अर्थात्:--

(i) भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2)

(ii) केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1)

(iii) उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951 (1951 का 65)

(iv) खाद्य अपशिष्टन निवारण अधिनियम, 1951 (1954 का 37)

(v) प्राथमिक वस्तु अधिनियम, 1955 (1955 का 10)

(vi) कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1)

(vii) प्रतिभूति संहिता (विनियम) अधिनियम, 1956 (1956 का 42)

(viii) धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27)

(ix) आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43)

(x) सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52)

(xi) एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापारिक व्यवहार अधिनियम 1969 (1969 का 54)

(xii) विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम 1973 (1973 का 46)

(xiii) रुग्ण औद्योगिक कंपन (विशेष उपबंध) अधिनियम, 1985 (1986 का 1)

(xiv) भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992
(1992 का 22)

(xv) विदेशी व्यापार (विकास और विनियमन) अधिनियम,
1992 (1992 का 22)

(ख) विदेशी मुद्रा परस्पर और नस्करों निवारण अधिनियम, 1974
(1974 का 52) के अर्हत किया कायदाध के लिए निरुद्ध नहीं किया
गया है:

परन्तु जहां केन्द्रिय सरकार ने, यथास्थिति उप-पैरा, (क) या उप-
पैरा (ख) के अर्हत दीर्घमिद्ध या निरुद्ध किए गए किसी व्यक्ति को
निष्पत्ति के संबंध में अपना अनुमोदन दे दिया है, जहां केन्द्रिय सरकार
का और अनुमोदन उस व्यक्ति को परस्परवर्ती निष्पत्ति के लिए आवश्यक
नहीं होगा यदि उसे ऐसे अनुमोदन के पश्चात् इस प्रकार दीर्घमिद्ध या निरुद्ध
नहीं किया गया है।

(ग) उनमें पञ्चम वर्ष की आयु पूरी कर चुकी है और सप्तर
वर्ष की आयु या यदि कंपनाने कोई सेवाविनियम की आयु विनिर्दिष्ट
की है तो वह आयु, दोनों में से जो भी पूर्ववर्ती, पूरी नहीं की है;

(घ) अब वह एक से अधिक कंपनानों में प्रबंधकार व्यक्ति है, वह केवल
एक कंपनी में पारिश्रमिक लेने का विकल्प करना है;

(ङ) वह भारत का निवासी है।

स्पष्टीकरण:—इस अनुसूची के प्रयोजन के लिए, भारत का निवासी
में वह व्यक्ति सम्मिलित है जो प्रबंधकार व्यक्ति के रूप में अपनी नियुक्ति
की तारीख से ठीक पूर्व बारह मास में अन्तर्गत की गतांतर अवधि तक
भारत में रह रहा हो और जो, —

- (i) भारत में रोजगार प्राप्त करने के लिए; या
- (ii) भारत में कार्यरत या व्यवसाय करने के लिए;
भारत में रहने आया है।

भाग 2

पारिश्रमिक

अनुभाग 1—लाभ कमाने वाली कंपनियों द्वारा देय पारिश्रमिक

धारा 198 और धारा 309 के उपबन्धों के अर्हत रहते हुए किसी
वित्तिय वर्ष में लाभ कमाने वाली कोई कंपनी वेतन, गृहगार्ड भत्ता,
परिवर्धियों, कर्मिक और अन्य भत्तों के रूप में कोई पारिश्रमिक संवत्
कर सकेगी, जो एक ऐसे प्रबंधकार व्यक्ति के लिए उसके शुद्ध लाभ के
पाँच प्रतिशत से अधिक नहीं होगा और यदि एक से अधिक ऐसे
प्रबंधकार व्यक्ति हैं तो उन सबकी मिलाकर दस प्रतिशत होगा।

अनुभाग 2—कोई लाभ कमाने वाली या अपयोज्य लाभ कमाने
वाली कंपनियों द्वारा देय पारिश्रमिक

1. इस भाग में किसी बात से होते हुए भी, जब किसी वित्तिय वर्ष
में प्रबंधकार व्यक्ति का पदार्थ के लागू रहने के दौरान कोई कंपनी
लाभ नहीं कमानी है या लाभ अपयोज्य है तो वह प्रबंधकार व्यक्ति को
प्रति वर्ष 10,50,000 रु. की अधिकतम सीमा में अनुधन या निम्न-

लिखित मापमान पर संगणित प्रति मास 87,500 रुपए वेतन, सहकारी
भत्ते, परिवर्धियों और कोई अन्य भत्तों के रूप में पारिश्रमिक संवत् कर
सकेगी:—

जहां कंपनी को प्रभावी पूंजी निम्नलिखित देय मासिक पारिश्रमिक निम्न-
लिखित से अधिक नहीं होगा:—

- | | |
|---|-------------|
| (i) 1 करोड़ रुपए से कम | 40,000 रुपए |
| (ii) 1 करोड़ रुपए या उससे अधिक
किन्तु 5 करोड़ रुपए से कम | 57,000 रुपए |
| (iii) 5 करोड़ रुपए या उससे अधिक
किन्तु 15 करोड़ रुपए से कम | 72,000 रुपए |
| (iv) 15 करोड़ रुपए या उससे अधिक | 87,500 रुपए |

2. कोई प्रबंधकार व्यक्ति निम्नलिखित पारिश्रमिक भाग प्राप्त का पात्र
होगा जो इस अनुभाग के पैरा 1 में विनिर्दिष्ट पारिश्रमिक को अधिकतम
सीमा की संगणना में सम्मिलित नहीं किया जाएगा,

(क) भविष्य निधि, अधिविधिता निधि या याचिकी निधि का इस
विस्तार तक अधिदाय किसे या हो एकल या एक मास करने
पर आय कर अधिनियम, 1961 के अर्हत करण्य नहीं है,

(ख) सेवा के प्रत्येक वर्ष के लिए मात्र मास के अंत में
अनुधन दर में नदिय उपदान, और

(ग) पदार्थ की समाप्ति पर छुट्टी का भुनाना।

3. इस अनुभाग के पैरा 2 में विनिर्दिष्ट परिवर्धियों के अतिरिक्त
कोई विदेशी प्रबंधकार व्यक्ति जिसके अंतर्गत कोई अधिकारी
भारतीय भी है। निम्नलिखित परिवर्धियों का पात्र होगा जो इस
अनुभाग के पैरा 1 में विनिर्दिष्ट पारिश्रमिक की अधिकतम सीमा
की संगणना में सम्मिलित नहीं की जाएगी:

(क) बाय शिक्षा भत्ता: भारत में या भारत में बाहर अध्ययन करने
वाले बायकों की दशा में, अधिकतम 5,000 रु. प्रति मास
प्रति बायक तक या उपगत आस्तिक व्ययों तक इन दोनों में
से जो भी कम हो, भीमित भत्ता। ऐसा भत्ता अधिकतम दो
बायकों तक अनुज्ञेय है।

(ख) भारत में बाहर अध्ययन करने वाले बायकों/विदेश में रहने वाले
कुटुम्ब के लिए धनकाश यात्रा भत्ता: बायकों का कुटुम्ब
के सदस्यों को, यदि वे भारत में प्रबंधकार व्यक्ति के साथ
निवास नहीं कर रहे हैं, तो भित्तवर्ती श्रेणी द्वारा वर्ष में एक
बार या प्रथम श्रेणी द्वारा दो वर्षों में एक बार विदेश में उनके
अध्ययन के स्थान या रहने के स्थान में भारत के लिए बायकी
अवकाश यात्रा भत्ता।

(ग) छुट्टी यात्रा ख्यायत: जहां यह प्रस्थापित किया जाता है कि
छुट्टी भारत में किसी स्थान के बजाय अपने देश में करीब की
जाए, जहां कंपनी द्वारा विनिर्दिष्ट निवासों के अनुसार स्वयं के
लिए और कुटुम्ब के लिए बायकी यात्रा भत्ता।

स्पष्टीकरण I:—इस भाग के अनुभाग II के प्रयोजनों के लिए "प्रभावी
पूंजी" से समावेश योग्य पूंजी (योग्य आवेदन धन या शेयरों के बिक्रय
अधिमों को अपवर्जित करते हुए) तक, यदि कोई हो, जो तत्काल योग्य
प्रतिभयन करते में जमा हो, आरक्षितियों और अधिशेष (पुनर्मुद्रागत
आरक्षितियों को अपवर्जित करते हुए), एक वर्ष के पश्चात् अतिरिक्त

दीर्घकालीन उद्योगों और निधियों (कामकाज नृजी उद्योगों, आंतरराष्ट्रीय, उद्योग पर जन नुक से विधिक न हों, मॉडर न्याय, बैंक गारंटी आदि और अन्य अव्यवस्थित उद्योगों को प्रभावित करने हुए) का एक जोड़ अभिप्रेत है जिसमें से किसी विनिधान (विषय किसी ऐसी विनिधान कंपनी द्वारा, जिसका मुख्य कारबार उद्योग, स्टॉक, डिबेंचरी या अन्य प्रतिभूतियों का वर्णन करता है, किए गए विनिधान की दशा में), संरचित हानियों और अपविष्टित न किए गए प्रारंभिक व्ययों का जोड़ बढ़ाया गया हो।

गारंटीकरण II (क) जहां प्रबंधकार व्यक्ति की नियुक्ति ऐसे वर्ष में की जाती है जिसमें कंपनी निषिद्ध की गई है, वहां प्रभावी पूर्ण ऐसी नियुक्ति की तारीख के आधार पर संयोजन की जाएगी,

(ख) किसी अन्य दशा में, प्रभावी पूर्ण उस विशेष वर्ष के, जिसमें प्रबंधकार व्यक्ति की नियुक्ति की जाती है, पूर्णतः निर्धारित या जो अंतिम तारीख के आधार पर संयोजन की जाएगी।

खण्ड III इस भाग के अनुभाग II के प्रकाशनों के नियुक्तन में प्रबंधकार व्यक्ति का प्रति या पत्नी, आश्रित बालक और आश्रित भावा-पिता अभिप्रेत है।

भाग III

इस अनुसूची के भाग I और भाग II को लागू करें

1. इस अनुसूची के भाग I और भाग II में निविष्ट नियंत्रित और पारिवर्तित सार्वजनिक अभिप्रेत में गैरप्रकारों के संरक्षण द्वारा अनुमोदन किए जाने के प्रतीत होंगे।

2. कंपनी का निष्ठापरिष्कार या संचित या जहां कंपनी ने संचित नियुक्तन नहीं किया है वहां पारिवर्तित व्यवस्था करने वाला संचित यह प्रमाणित करेगा कि इस अनुसूची की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है और ऐसा प्रमाणपत्र द्वारा 269 की उपधारा (2) के अर्थात् रजिस्ट्रार के पास फाइल की गई दिवसों में संचितन किया जाएगा।

[फा. सं. 9/4/92-सी.नं. 5]

प्रार. श्री. जोशी, संयुक्त सचिव

यून अनुसूची कंपनी (संशोधन) अधिनियम, 1988 द्वारा मा.का.नि. स. 559 (अ), तारीख 10-6-1988 द्वारा अंतर्स्थापित की गई थी।

उपरोक्त अनुसूची का निर्धारित द्वारा संशोधन किया गया :

(i) मा. का. नि. 784 (अ) तारीख 13-7-1988

(ii) मा. का. नि. 723 (अ) तारीख 18-9-1990

(iii) मा. का. नि. 510 (अ) तारीख 14-7-1993

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 1st February, 1994

G.S.R. 48(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 641 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Central Government hereby makes the following amendments in Schedule XIII to the said Act, namely :—

In the said Schedule, for Parts I, II and III and the entries relating thereto, the following Parts and entries shall be substituted, namely :—

"PART I

APPOINTMENTS

No person shall be eligible for appointment as a managing or whole-time director or a manager (hereinafter referred to as managerial person) of a company unless he satisfies the following conditions, namely :—

(a) he had not been sentenced to imprisonment for any period, or to a fine exceeding one thousand rupees, for the conviction of an offence under any of the following Acts, namely :—

(i) the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899),

(ii) the Central Excise and Salt Act, 1944 (1 of 1944),

(iii) the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951),

(iv) the Prevention of Food Adulteration Act, 1954 (37 of 1954),

(v) the Essential Commodities Act, 1955 (10 of 1955),

(vi) the Companies Act, 1956 (1 of 1956),

(vii) the Securities Contracts (Regulation) Act, 1956 (42 of 1956),

(viii) the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957),

(ix) the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961),

(x) the Customs Act, 1962 (52 of 1962),

(xi) the Monopolies and Restrictive Trade Practices Act, 1969 (54 of 1969),

(xii) the Foreign Exchange Regulation Act, 1973 (46 of 1973),

(xiii) the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985 (1 of 1986),

(xiv) the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992),

(xv) the Foreign Trade (Development and Regulation) Act, 1992 (22 of 1992);

(b) he had not been detained for any period under the Conservation of Foreign Exchange and Prevention of Smuggling Activities Act, 1974 (52 of 1974),

Provided that where the Central Government has given its approval to the appointment of a person convicted or detained under sub-paragraph (a) or sub-paragraph (b), as the case may be, no further approval of the Central Government shall be necessary for the subsequent appointment of that person if he had not been so convicted or detained subsequent to such approval;

(c) he has completed the age of twenty-five years and has not attained the age of seventy years or the age of retirement, if any, specified by the company, whichever is earlier;

(d) where he is managerial person in more than one company, he opts to draw remuneration from only one company;

(e) he is resident in India.

Explanation :—For the purpose of this Schedule, resident in India includes a person who has been staying in India for a continuous period of not less than twelve months immediately preceding the date of his appointment as a managerial person and who has come to stay in India :—

(i) for taking up employment in India, or

(ii) for carrying on a business or vocation in India.

PART II REMUNERATION

Section I.—Remuneration payable by companies having profits.

Subject to the provisions of section 198 and section 309, a company having profits in a financial year may pay any remuneration, by way of salary, dearness allowance, perquisites, commission and other allowances, which shall not exceed five per cent of its net profits for one such managerial person, and if there is more than one such managerial person, ten per cent, for all of them together.

Section II.—Remuneration payable by companies having no profits or inadequate profits.

1. Notwithstanding anything contained in this Part, where in any financial year during the currency of tenure of the managerial person, a company has no profits or its profits are inadequate, it may pay remuneration to a managerial person by way of salary, dearness allowance, perquisites and any other allowances, not exceeding ceiling limit of Rs. 10,50,000 per annum or Rs. 87,500 per month calculated on the following scale :—

Where the effective capital of company is—	Monthly remuneration payable shall not exceed—
(i) less than rupees 1 crore	rupees 40,000
(ii) rupees 1 crore or more but less than rupees 5 crores	rupees 57,000
(iii) rupees 5 crores or more but less than rupees 15 crores	rupees 72,000
(iv) rupees 15 crores or more	rupees 87,500

2. A managerial person shall be eligible to the following perquisites which shall not be included in the computation of the ceiling on remuneration specified in paragraph 1 of this Section :

- (a) contribution to provident fund, superannuation fund or annuity fund to the extent these either singly or put together are not taxable under the Income-tax Act, 1961.
- (b) gratuity payable at a rate not exceeding half a month's salary for each completed year of service, and
- (c) encashment of leave at the end of the tenure.

3. In addition to the perquisites specified in paragraph 2 of this Section, an expatriate managerial person (including a non-resident Indian) shall be eligible to the following perquisites which shall not be included in the computation of the ceiling on remuneration specified in paragraph 1 of this Section :

- (a) Children's education allowance : In case of children studying in or outside India, an allowance limited to a maximum of Rs. 5000 per month per child or actual expenses incurred, whichever is less. Such allowance is admissible upto a maximum of two children.
- (b) Holiday passage for children studying outside India/ family staying abroad : Return holiday passage once in a year by economy class or once in two years by first class to children and to the members of the family from the place of their study or stay abroad to India if they are not residing in India, with the managerial person.

(c) Leave travel concession : Return passage for self and family in accordance with the rules specified by the company where it is proposed that the leave be spent in home country instead of anywhere in India.

Explanation I : For the purposes of Section II of this Part, 'effective capital' means the aggregate of the paid-up share capital (excluding share application money or advances against shares) ; amount, if any, for the time being standing to the credit of share premium account; reserves and surplus (excluding revaluation reserve); long-term loans and deposits repayable after one year (excluding working capital loans, overdrafts, interest due on loans unless funded, bank guarantee, etc. and other short-term arrangements) as reduced by the aggregate of any investments (except in case of investment by an investment company whose principal business is acquisition of shares, stock, debentures or other securities), accumulated losses and preliminary expenses not written off.

Explanation II : (a) Where the appointment of the managerial person is made in the year in which company has been incorporated, the effective capital shall be calculated as on the date of such appointment ;

(b) in any other case the effective capital shall be calculated as on the last date of the financial year preceding the financial year in which the appointment of the managerial person is made.

Explanation III : For the purposes of Section II of this Part, family means the spouse, dependent children and dependent parents of the managerial person.

PART III

PROVISIONS APPLICABLE TO PARTS I AND II OF THIS SCHEDULE

1. The appointment and remuneration referred to in Parts I and II of this Schedule shall be subject to approval by a resolution of the share-holders in general meeting.

2. The auditor or the secretary of the company or where the company has not appointed a secretary, a secretary in whole-time practice shall certify that the requirements of this Schedule have been complied with and such certificate shall be incorporated in the return filed with the Registrar under sub-section (2) of section 269".

[F. No. 14/92-CLV]

R. D. JOSHI, Jt. Secy.

The principal Schedule was inserted by the Companies (Amendment) Act, 1988 vide GSR No. 559(E), dated 10-6-1988.

The above Schedule was amended vide :—

- (i) GSR 784(E), dated 13-7-1988.
- (ii) GSR 723(E), dated 18-9-1990.
- (iii) GSR 510(E), dated 14-7-1993.